

१ओं वाहिगुरू जी की फ़तह ।।



केश हमारा गौरव



मूल लेखक :
स. महिन्द्र सिंघ

हिन्दी अनुवाद
बीबी परमजीत कौर

प्रकाशक :-
धर्म प्रचार कमेटी,
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी)
श्री अमृतसर ।

निःशुल्क

प्रकाशक :–
धर्म प्रचार कमेटी,
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी)
श्री अमृतसर ।

मई १९९९ २०,०००

मुद्रक :–
गोल्डन आफसैट प्रैस,
गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर ।
दूरभाष : ५४०८४८

केश — हमारा गौरव

केशों का संकल्प

केश किस को कहते हैं ? सिक्ख धर्म में मानवीय शरीर पर स्वभाविक तथा स्वतन्त्रा रूप में होने वाले सर्व बालों को केश माना जाता है। केवल सिर पर ही केश नहीं बल्कि यह कुदरत की एक विशेष देन हमारे शरीर के सारे अंगों पर मानो उस की छाप मोहर जैसे बनी होती है। सिक्खों से आम तौर पर किया जाता यह सवाल कि "आप केश दाढ़ी क्यों रखते हो ? बिल्कुल निर्मूल है। केश दाढ़ी रखे या उगाये नहीं जाते बल्कि यह तो शरीर के दूसरे अंगों जैसे अपने आप होने वाले शरीर का एक अंग हैं। इस लिये सवाल तो केश दाढ़ी कटवाने वालों से होना चाहिये कि आप केश दाढ़ी क्यों कटवाते हो?

पुरातन हिन्दू धर्म तथा केश

केश प्रारम्भ से ही हमारा गौरव हैं। आज चाहे प्रत्येक हिन्दू भाई सिर मुनाये तथा दाढ़ी शेव की हुयी अवस्था में दिखायी देता है पर पुरातन हिन्दू धर्म के अनुसार केश कटाना वर्जित है। हिन्दू धर्म की सब से पुरातन लिखित रूप में उपलब्ध पुस्तक ऋग्वेद है । ऋग्वेद में केशों की महानता के बारे में जो कुछ अंकित हैं, वह इस प्रकार हैं, ऋषि कुत्स जी कहते हैं कि ऐ पवित्र चमत्कारी केशों वाले शिव जी महाराजा हम आप को सदा नमस्कार करते हैं । आप देव—लोक में रहने वाले बहुत ही सुन्दर तथा तेज—प्रताप वाले है। यहीं नहीं, यजुर्वेद में ऋषि कुत्स जी कहते हैं कि मैं केशों वाले विष्णु भगवान को नमस्कार करता हूँ तथा हम अपने केशों की बदौलत सारे देवताओं

की प्रसन्नता प्राप्त कर रहे हैं । (यजुर पन्ना ८१९, तथा १२२७) मनुस्मृति में भी भिन्न –भिन्न श्लोकों द्वारा केशों की महानता दर्शायी गयी है ।

दूसरे धर्मों में केश

केवल आर्य धर्मों में ही केशों की महानता तथा रक्षा ज़रूरी नहीं बल्कि इबराईन मतों में भी इन को मानव–शरीर का एक अंग बताया गया है –

"वरमतिमुल हं जावल उमरता लिलाह फुइन
उह सिर तुम़ फ्मस मिलल हदायो वला ताहले ।"

– कू रउसा कुभ ॥

(कुरान सरीफ सिपारा २, सूरत बकर आइत १९५) ऊपर लिखी आइत के अर्थ इस तरह हैं– "पूरा करो हजु को तथा उम्रों को वास्ते अला के... तथा न मुनाओ सिर अपने को।"

ईसाई तथा यहूदी मतों में केशों का रखना ज़रूरी बताया है पर आज हम देखते हैं कि इस अपने अद्वितीय गौरव को धीरे–धीरे सब धर्मों वालों ने त्यागना शुरू कर दिया है तथा वर्तमान समय में यह एक रिवाज बन के रह गया है । शायद ऐसे घातक रिवाज से बचने के लिये दशमेश–पिता साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने अपने शिष्यों को साबित–सूरत खालसा पन्थ के रूप में साजना करने के समय साथ ही यह चेतावनी भी दे दी –

जब लग रहे खालसा निआरा।
तब लग तेज दिउ मैं सारा।
जब इह गहे बिपरन की रीत।
मैं न करों इन की परतीत।

ईसाई मत में केशों की क्या महानता है, यह निम्न लिखित वार्ता से सिद्ध है —
बाईबल में सिंपसन तथा दलाइला का किस्सा अंकित है। सिंपसन ताकतवर था, उस के शत्रु उस से भयभीत थे ।

उस की प्रेमिका *"दलाइला"* थी । विरोधियों ने सिंपसन को शारीरिक जंग में हराने की असमर्थता प्रकट करते हुये उस की प्रेमिका को अपने साथ जोड़ा। उस ने कहा, सिंपसन की ताकत का भेद उस के केशें में है, केश काट दो तो वह हार जायेगा । काफी रकम देकर केशों में से एक लिट काटने की डयूटी भी दलाइला के सिर लगायी थी । उस ने विश्वासघात करते हुये उस की लिट काट दी, जब कि वह सोया पड़ा था । यह नाज़रथ का रहने वाला था । नाज़रथ हज़रत ईसा का शहर है । बाल काटे जाने के बाद दुश्मनों ने सिंपसन पर हमला कर दिया तथा वह शक्तिहीन हो जाने से गिरफतार कर लिया गया ।"

यह कहानी इसाईयों की धार्मिक पुस्तक में बिल्कुल इसी तरह अंकित है । निःसन्देह हम कह सकते हैं कि बहादुरी तथा शूरवीरता प्रारम्भ से ही केशों के साथ सम्बन्धित है ।

त्रेता तथा द्वापर युग में केश :

पुरातन हिन्दू धर्म ग्रन्थ (ऋग्वेद) के अनुसार केशों की क्या महानता है, हम देख चुके हैं । त्रेता तथा द्वापर युग में केशों की महानता से सम्बन्धित दो उदाहरण दर्शनीय है–

त्रेता युग में "परशुराम" नायक एक ब्राह्मण ने जब बहुत सी फौजों को एकत्रा करके क्षत्रियों का कत्ल शुरू कर दिया तो श्री राम चन्द्र तथा लक्ष्मण भी इस की लपेट में आ गये। आपस में लड़ते हुये लक्ष्मण ने परशुराम को अपने नीचे गिरा लिया तथा खंजर मार कर उस के प्राण लेने चाहे वह उभी खंजर मारने ही लगा था कि श्री राम चन्द्र ने उस को ऐसा करने से जल्दी से रोक दिया तथा यह कहा कि "ऐसे भारी देशद्रोही, पापी तथा मुज़रिम को भारी सज़ा देनी चाहिये, इस लिये उस को जान से मार देने की बजाए उसके केश काट कर छोड़ दिया गया ।"

महाभारत में प्रंसग है कि रुकमणी को घर लाते समय कृष्ण के भाई बलभद्र ने उन से पूछा कि "क्या आप ने रुकमणी के भाई रुकमण को सचमुच ही कत्ल कर दिया

है? तो श्री कृष्ण ने यह उत्तर दिया—— हे बलभद्र ! धर्म शास्त्रों का यह आदेश है कि जिस इन्सान को फांसी से भी अधिक कठोर सज़ा देनी हो तो उस के मुँह तथा सिर के केशों को कटा देना चाहिये।"

प्रश्न यह उठता है कि फिर यह केश कटवाने वाली भेड़ – चाल कैसे शुरू हुयी ? "गुर प्रताप सूरज ग्रन्थ" में भाई संतोख सिंघ जी लिखते हैं कि राजा नंद ने ब्राहमणों की बढ़ती हुयी प्रतिभा को समाप्त करने के लिये कुछ ब्राहमणों को बंदी बना लिया तथा बलपूर्वक उन के केश कटवा दिये क्यों कि उस के मंत्रियों तथा ज्योतिषियों ने बताया था कि ऐसा करने से उन की आत्मिक शक्ति जाती रहेगी (नष्ट हो जायेगी) । भाई साहिब जी लिखते हैं ——

सुनि महिपत के मन महिं भाई।
जहिं कहिं ते दिज लीए बुलाई।
निज बल करि कै सिर मुंडवाए।
शमस समेत केश बिनसाए।
॥५२॥

(गुरु प्रताप सूरज ग्रन्थ, पन्ना ५५९२)

जब नंद बादशाह ने देखा कि ब्राह्मणों की बुद्धि को भ्रष्ट करने के लिये उस के द्वारा चलाया गया तीर ठीक निशाने पर लगा है तो उस ने उन केशहीन ब्राह्मणों द्वारा देश भर के बाकी रहते अनपढ़ ब्राह्मणों पर भी वैसा ही वार करना चाहा । ऐसा करने से उस का भाव केवल यह था कि भारत में कोई भी ब्राह्मण केशधारी न रहने दिया जाये ताकि वे फिर वेदादि धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करके उस के राज्य भाग को नष्ट करने के लिये कोई पहली जैसी साज़िश न कर सके । इस लिये नन्द बादशाह ने उन से कई तरह के हुक्मनामे आम ब्राह्मणों को नाम जारी करवाये तथा इस तरह केश काटे जाने के बाद सारी मानव जाति कायर तथा बुजदिल हो गयी । उन की देखा देखी खत्री, शूद्र तथा वैश्यों ने भी केश कटवा दिये –

सभि जग मुंडति भए बिप्र जबि।
इह भी धरम बखानति भे तबि। ५३।।
पठहिं श्लोक सुनावनि करे।
छत्री बैसनि के कच हरे।
(गुरु प्रताप सूरज ग्रन्थ, पन्ना ५५९२)

केश तथा सिक्ख गुरु

कई लोगों का विचार है कि केशधारी सिक्ख पंथ की नींव तो गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने रखी थी । उन से पहले नौ गुरू तो केशधारी होने के समर्थक नहीं थे । इस लिये हम उन के सिक्ख होने के नाते दाढ़ी केश कटवा सकते हैं। पर ऐसे वीर एक बड़ी महान भूल का शिकार हो रहे हैं। शायद उन को पता नहीं कि सिक्ख की सम्पूर्ण तस्वीर तो गुरू नानक देव जी ने ही चित्रित की थी । वे आप स्वयं केशधारी रहे तथा ऐसा ही उपदेश दिया । वे तो बहाउदीन पीर को सिर मुनवाना गिरावट का कारण बताते हैं –

आखे नानक शाह सच, सुणहो बहाउदीन पीर।
हिंदू मुसलमान दोह, सिर गुंम थीए ज़हीर।
(गोशट मक्के दी)

केवल सिक्ख मत के मूल गुरू नानक ही नहीं बल्कि उन के समकाली गैर सिक्ख फकीर भक्त कबीर जी ने भी केश मुनाने वाली मानवीय– किया पर अफसोस प्रगट किया । समय के जोगी तथा नाथ जो परमात्मा को प्राप्त करने के लिये केश मुनाना ज़रुरी समझते थे पर एक व्यंग किया –

मूड मुंडाए जौ सिधि पाई।।
मुकती भेड न गईआ काई।।
(गडड़ी कबीर जी, पन्ना ३२४)

इस के बिना उस समय के भक्त "नामदेव" जी तथा अन्य भक्त तथा संत जन जो हिन्दू धर्म में आ चुकी कुरीतियों को भक्ति आन्दोलन द्वारा दूर करने के यत्न करते

रहे, उन्हों ने केशों को मानवीय शरीर का एक अटूट अंग बता कर उन की सम्भाल के लिये कहा । गुरू नानक देव जी ने तो समय समय पर अपनी उदासियों (यात्राओं) के दौरान, लोगों में घूम कर उन को उपदेशों द्वारा केश रखने के लिये भी प्रेरित किया । उन के कुछ हुक्मनामें आज भी जन्म साखियों या गोष्ठियों के रूप में सम्भाले हुये मिलते है :

सची सुनंत रब दी, मूए लै आइआ नाल।
रखे मूए सलामती सो खासा बंदा भाल।

भाव, उस अकाल पुरख परमात्मा की यह खास देन केशों को मनुष्य जन्म के समय साथ ही लेकर आता है तथा जो केशों को सम्भालता है वह शुद्ध तथा पवित्रा मनुष्य है । इस तरह गुरू जी के अनुसार केशों का अदब तथा सत्कार कायम रखना जरूरी है । यहां ही बस नहीं है, वे केशधारी के बारे में ये लिखते हैं ––

अवल सुंनत मूए है, सिर ते रखै जोइ।
पावै मुरातबा सयदी वडा रिखीसर होइ।

भाव, परमात्मा के रब्बी हुक्म अनुसार जो पुरुष केशों को बरकरार रखता है वंह ऊंची पदवी लोक तथा परलोक में हासिल करता है । वहे तो और भी आगे बढ़ते हैं –

रखे मूए हलाल खाइ।
निकट हराम न जाइ।
सभ संसार की किआ चले,
तिस ते डरै खुदाइ।

(मक्के दी गोशट)

गुरू नानक देव जी "वडहंस राग" में भी बालों की खूबसूरती की तरफ इशारा करते हैं –

सोहणे नक जिन लंमड़े वाला ।। (वडहंस, पन्ना ५६७)

गुरू नानक जी के समान दूसरे गुरू साहिबान ने भी यह प्रथा जारी रखी । गुरू रामदास जी अपने पवित्र केशों के साथ सतिगुरू के चरण झाड़नें का संकेत करते हैं –

हरि हरि नामु द्रिड़ाइओ गुरि मीठा

गुर पग झारह हम बाल।।

(प्रभाती, पन्ना १३३५)

इसी तरह गुरू अर्जन देव जी – साबत सूरत दसतार सिरा" का उपदेश करते हैं तथा जो केशों तथा दाढ़ी का असम्मान करता है उस को बेईमान कह के उस की निन्दा करते हैं –

साबत सूरति रब दी भंने बेईमान।

ऐसे कथनों से सिद्ध होता है कि प्रारम्भ से ही केशों की महानता सिक्ख धर्म में दर्शायी गयी है, इस तरह केश सिक्खों का गौरव हैं । गुरू तेग बहादूर जी की अद्वितीय कुर्बानी के बाद साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने एक ऐसे पंथ की नींव रखने का निश्चय किया जो न केवल अपनी ही रक्षा कर सके, बल्कि हर ग़रीब मज़लूम के लिये हर तरह की कुर्बानी करने के लिये तैयार रहे। वे अपने सिक्खों को एक अलग रूप देना चाहते हैं। जिस से हज़ारों के बीच खड़ा भी एक पहचाना जा सके। वैसाखी वाले शुभ दिन ३० मार्च १६९९ को तख्त श्री केसगढ़ साहिब (आनंदपुर) में एक अद्वितीय न्यारी तथा विलक्षण कौम की नींव रखी गयी। यह एक महान मनोवैज्ञानिक कारनामा था। यह पिछले कई सालों से तैयार हो रहे सिक्ख समाज की अन्तिम रूप रेखा थी। खालसे की सृजना कर, अमृत की दात देने के बाद पाँच ककारों में सब से पहला स्थान केशों को दिया गया तथा उस पवित्र स्थान जहाँ, खालसे की साजना की गयी का नाम केशगढ़ साहिब रखा गया ।

इस के बाद के सिक्ख इतिहास की हमें अच्छी तरह जानकारी है कि अमृत छक कर केशधारी सिक्ख जैसे एक दम गीदड़ से शेर बन गये हों ! उन की काया–कल्प हो गयी । एक एक सिक्ख सवा सवा लाख से लड़ने के योग्य हो गया । बचित्र सिंघ जैसे मस्त हाथियों से मुकाबला करने लगे । आनन्दपुर के किले में गिनती के सिक्ख, तथा चमकौर की गढ़ी में मुठी भर सिक्ख लाखों की गिनती की बाहर खड़ी मुगल फौजों का मुकाबला करते रहे । यह एक

मनोवैज्ञानिक नुकता है कि जब हम अपने को सामने खड़े दुश्मन से ज़्यादा प्रभावशाली नहीं समझते तो उस पर जीत प्राप्त करनी तो एक तरफ रही हम, उस से लड़ने का साहस भी नहीं कर सकते । पर अब तो सिक्खों की शक्लें चेहरे, केशों तथा दाढ़ियों वाले खूंखार पठानों से अधिक प्रथावशाली थे । उन के अन्दर से हीन भावना खत्म हो चुकी थी तथा वो अपने मुसलमान तथा मुगल दुश्मनों को अपना पानी भरने वाले समझने लगे थे । हकूमत एक शिकंजे में फंस गयी । अब आवश्यकता थी सिक्ख के इस नवरूप को कायम रखना, जो नवरूप समय के अनुकूल था। दशमेश पिता ने हदायत दी —

निशानि सिखी ईं पंज हरफ़ काफ़।
हरगिज़ न बाशद ईं पंज मुआफ।
कड़ा कारदो कच्छ कंघा बिदां।
बिला केश हेच असत जुमला निशां।

पहले अपने सिक्खों को दशमेश पिता ने निवाजा तथा यह कह कर सम्मानित किया—

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे महि हउ करउ निवास।

(सरब लोह, ग्रन्थ, पन्ना ५३१)

पर साथ ही चेतावनी भी दी —

रहणी रहै सोई सिख मेरा ।

(रहतनामा भाई देसा सिंघ)

केश तथा पुरातन सिक्ख

उपर्युकत महावाक्य को मुख रखते हुये सिक्खों ने हर प्रकार से अपनी साबत सूरत कायम रखी । केशों की पवित्रता को कायम रखने के लिये सिक्खों ने तरह तरह के

कष्ट सहे, मौत को गले लगाया, बंद बंद कटवाये, आरों से चीरे गये, खोपड़ियों को उतरवाया, बच्चों को टुकड़े–टुकड़े करवा कर गलों में हार डलवाये गये, पर अपने इष्ट से मुख न मोड़ा। अपने शरीर के किसी भी रोम की बेअदबी न होने दी ।

दुश्मन ने सिक्खी के बूटे को जड़ पकड़ने से पहले ही उखाड़ देने की पूरी कोशिश की पर वह चढ़ते दिन को रात की कालिमा मे कैसे बदल सकता था? सिक्ख अपने केशों को कायम रखते, नितनेम करते हुये, उच्च आचरण बनाते हुये आगे ही आगे बढ़ते गये । काहनूवान के छंभ में यदि किसी समय थोड़े रह गये तो लखपत राय जैसों ने ऐलान किया कि सिक्ख खत्म कर दिये गये हैं । सिक्खों के सिरों का मूल्य रखा गया । केश कटवा लेने वालों के लिये ईनाम रखे गये। मीर मन्नु ने उम्र भर कोशिश की कि सिक्ख मार दिये जायें पर उस को आगे से खरा उत्तर मिलता रहा। सिक्ख गाते रहे —

मंनू असाडी दातरी असीं मंनू दे सोए।
जिउ जिउ मंनू वढदा असीं दूणे चौणे होए।

आज सिक्ख तथा केश

पर अफसोस है —

"इस घर को आग लग गयी घर के चिराग से।" सिक्खी के जिस बूटे को मुगल उखाड़ न सके, अबदाली गिरा न सका, जिस की छाया को दूरानी समाप्त न कर सका, यह दिन प्रति दिन बढ़ता गया, फैलता गया तथा कई अन्य भी आ कर इस सघन छायादार बूटे के नीचे आनन्द अनुभव करने लगे—आज हमारे अपने नौजवान ही बूटे की फूट रही कलियों को खिलने देने से इन्कार करते हैं। हम अपने स्कूलों तथा कालिजों में पढ़ते विद्यार्थियों की ओर देखें कारखानों तथा फैक्टरियों में काम करने वाले

कर्मकारों की और दृष्टिपात करें, खेतों मे हल चलाते बांके शोरों की तरफ नज़र मारें तो पता चलता है सारे ही धड़ाधड़ दाढ़ियाँ तथा केश कटवा रहे हैं, पवित होते जा रहे हैं ।

यह पतितपन फैशन तथा रिवाज बनता जा रहा है । हमारे नौजवान केश कटवाने में अपने अपमान के बजाय अपनी इज्जत समझ रहे हैं । आओ पड़ताल करें इस के कारणों की तथा कोई योग्य इलाज ढूँढने में जुट जायें—

हमने सिक्ख विद्या—संस्थायें धर्म के प्रचार के लिये बनायी थीं । आज इन्हीं विद्याल्यों में ही सिक्ख नौजवान पतित हो रहे हैं। क्या सम्बन्धित अधिकारी अभी इस सच्चाई को जान नहीं पाये ? यदि वे जानते हैं तो सारे मामले की छानबीन क्यों नहीं की जाती ? इस के विपरीत देखा जाता है कि पढ़ाने वाले प्रोफैसरज़ भी केश तथा दाढ़ी को कत्ल करते हैं । सिक्ख धर्म में केशों के महत्व को अपने विद्यार्थियों को समझाने के बजाये वे स्वयं इस का मज़ाक उड़ाते हैं । जिस उद्धेश्य को मुख रख कर ये स्कूल तथा कालिज शुरू किये गये थे उस मनोरथ की पूर्ति के लिये सुधार की आवश्यकता है। सुधार का आरम्भ अध्यापकों से होना चाहिये तो ही वे विद्यार्थियों को कुछ समझा सकेंगें ।

इस पतितपन की बढ़ती लहर का एक अन्य बड़ा कारण है— दिन प्रति दिन फैल रही नास्तिकता । आम पढ़ा—लिखा वर्ग आज अपने को मार्कस के उसूलों का धारण कर्ता बताता है तथा किसी भी धर्म में विश्वास करने से इन्कार करता है । ऐसी दशा में केश रखने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता ! पर वे भूल जाते हैं कि यह विद्वान भी कुछ उसुलों को धारण करने वाला था, स्वयं केयाधारी था । जो लोग धर्म को अफीम का दर्जा देने लग गये हैं उन को बताने की आवश्यकता है कि सिक्ख धर्म मनुष्य को सदा चढ़ती कला में रहने का सन्देश देने वाला एक इलाही तथा अलौकिक करिश्मा है।

आज थोड़े ज्ञान वाला नौजवान विद्यार्थी यह भी कहता हैं कि विज्ञान का युग है । साइंस धर्म को पीछे छोड़ रही है। परमात्मा की बात करनी किसी पुराने युग की कहानी बन गयी है तथा इस प्रभाव के नीचे दाढ़ी, केश कटवा कर अधार्मिक बनने में अपना मान समझते हैं । पर वे भुले हूये यह नहीं जानते कि कोई भी महान् वैज्ञानिक नास्तिक नहीं हुआ। बड़े से बड़े डाक्टर आज भी आप्रेशन करते समय आपने परमात्मा का ही ध्यान रखता है तथा कहता है कि मनुष्य का फर्ज़ तो यत्न करना है, प्राण बचाने उस सर्वशक्तिमान के हाथ में हैं।

समूचे तौर पर आवश्यकता है कि आज कोई सभा सोसाइटी बना कर स्कूलों तथा कालिजों मे धर्म का प्रचार किया जाये । इन्हीं विद्यार्थियों ने ही कल कौम के वारिस बनना है । यदि इन में प्रचार न किया गया तो गुरुद्वारों में प्रचार करने का शायद अधिक लाभ न हो सके । सिक्ख तो सिक्ख हैं ही । यह चाहिये कि पतित हो चुके मनुष्यों को फिर सिक्खी धारण करने के लिये प्रेरित किया जाये। इस मन्तव्य की सिद्धि के लिये प्रत्येक शहर में, गाँव में तथा नगर में आज एक इन्कलाबी लहर जारी करने की ज़रूरत हैं ।

केशों के लाभ

उपर्युक्त मन्तव्य की पूर्ति के लिये यह ज़रूरी है कि केशों का निरादर कर रहे नौजवानों को केशों के लाभों की जानकारी दी जाये । यहां केशों के बहुपक्षीय महत्व पर विस्तार से चर्चा करते हैं –

१. *अध्यात्मिक पक्ष –* प्रारम्भ से आज तक सभी अध्यात्मिक नेता केशधारी हुये हैं । गुरूओं, भक्तों तथा आध्यात्मिक महापुरुषों की जिन्दगी में एकाग्रता प्रधान होती है । एकाग्रता किसी बंधन से प्राप्त नहीं होती, यह तो

मन की इच्छाओं को नियन्त्रण में रख लेने से प्राप्त होती है। सन्तोषी जीवन ही हुक्म में रहने वाला जीवन है । गुरूओं की अपनी सारी जिन्दगी सन्तोष की जिन्दगी थी। कामनायें थीं पर कामनाओं को सन्तोष ने नियन्त्रित कर लिया था । केशों का स्वाभाकि तथा स्वतन्त्र आस्तित्व एक कुदरती जिन्दगी जीने के लिये प्रेरित करता है चाहे वह सादगी तथा खूबसूरती भरपूर है, अध्यात्मिक स्तर पर यह स्वीकार कर लिया गया है– "जिन् पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि", इसी लिये केश कटवाना या केशों की कुदरती जिन्दगी को भंग करना, यह अध्यात्मिक जगत् से बाहर कर देने की सज़ा रही है या यह एक ऐसा तिरस्कार था जो मनुष्य को अध्यात्मिक जीवन स्तर से गिरा देता था ।

सिक्ख समाज में क्यों कोई वर्णभेद नहीं, इस लिये कोई भी अध्यात्मिक गगन मंडल में डुबकी लगा सकता है। ये कोई ऋषि मुनि या पुरातन ब्राहमण नहीं थे बल्कि सिक्ख गुरू थे जिन का उसुल गुरू कहलवाने से पहले चेला कहलवाना था । इस लिये प्रत्येक सिक्ख को केवल केश रखने के लिए प्रिरित नहीं किया बल्कि ज़रूरी करार देकर बहादुरी सुन्दरता तथा स्वतन्त्रता के साथ–साथ अध्यात्मिक उच्चाईयों में विचरणे करने का भी आदेश दिया ।

संस्कृतिक पक्ष — केश हमारी पुरानी भारतीय संस्कृति का एक ज़रूरी चिन्ह हैं । पुरातन भारतीय संस्कृति वेदों तथा पुराणों में निहित है, वहां केशों को रखना ज़रूरी बताया है । ऋृग्वेद के मन्त्र सूत्र ५५ मंडल २ में प्रत्येक इन्सान की साबत सूरत दिखायी गयी है। यजुर्वेद के अध्याय २० मंडल ५ में ऋषियों ने केशों की स्तुति करते हुये इन्हें मानव समाज का एक अंग बताया है । सामवेद में अध्याय ३ मंडल १४ में ईश्वर को पवित्र केशधारी बता कर उस की प्रंशसा की गयी है । सामवेद के कांड १९, सूत्र ६०, मंडल १ में स्पष्ट आदेश है कि जंगी फौज सारी पवित्र केशों सहित होनी चाहिये । मनुस्मृति में पवित्र केशों का सम्मान करने के समर्थन में अनेक श्लोक मिलते हैं।

वेदों पुराणों, शास्त्रों, उपनिषदों तथा स्मृतियों में हमारी पुरातन सभ्यता अंकित है जो केशधारी होना सिखाती है। आज यदि फैशन हमें केश कटाने के लिये प्रेरित करता है तो वह फैशन सभ्यता पर घातक है। ऐसे फैशन को दूर से ही सौ सौ सलाम। कोई भी कौम जब सभ्यता को त्याग देती है तो उस का पतन होना आरम्भ हो जाता है । फिर केश रखवा कर सिक्ख गुरूओं ने सभ्यता को तथा संस्कृति को अपनाया। इस लिये केश रख कर हम अपने सांस्कृतिक विरसे को सम्भाल रहे हैं । हमें इस पर मान होना चाहिये।

२. *धार्मिक पक्ष* —— जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि वैसे तो सारे ही धर्म ग्रन्थ कुरान, वेद, पुराण, गीता, बाईबल आदि केशों के महत्व को बताते हैं पर सिक्ख धर्म में तो केशों को विशेष ही स्थान प्राप्त है। जो केश नहीं रखता है वह धार्मिक दृष्टि से पतित तथा कुमार्गगामी है । इसी धार्मिक जज़्बे के लिये सिक्खों ने असहय कष्ट सहे पर सिक्खी सिदक न हारा । केशों को अपने प्राणों के संग अन्तिम समय तक निबाहा ।

असल में खालसा पन्थ की महानता खालसे के रूप तथा जीवन दोनों के मेल–जोल से है । खालसे का जीवन तथा रहत एक साथ चलते हैं । रहत को जीवन तक निभाना तथा जीवन को रहत के साथ बिताने का खलसे को आदेश है। रहतनामों में भी इस रहत की महानता दर्शायी गयी है, जैसे कि :

रहत बिना नहि सिंघ कहावै।
रहत बिना दर चोटां खावै।
रहत बिना जग मो भरमाई।
रहत बिना नर नरके जाई।।८८।।
रहत बिना तनखाही जानो।
रहत बिना जड़ भूत बखानो।
रहत बिना सुख कबहू न लहै।

तां ते रहत सु द्रिड़ कर गहै।

(रहतनामा भाई देसा सिंघ)

रहत में रहने वाले सिक्ख को गुरू गोबिंद सिंघ जी अपना "साहिब" बताते हैं तथा आप की कृपा तथा रहमत का अमृत ऐसे सिक्ख पर हर समय बरसता रहता है। पर जो सिक्ख रहत को त्याग दे तथा कुमार्गगामी हो जाये तो कृपा पूर्ण यह हाथ उठ जाता है । इस लिये केशों की रहत को कायम रखना अधिक ज़रूरी है ।

४. वैज्ञानिक पक्ष —– आज का युग वैज्ञानिक युग है। प्रत्येक बात को वैज्ञानिक कसौटी पर कसा जाता है । केश रखने भी वैज्ञानिक दृष्टि से ज़रूरी है । साइंस ने आज यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य के केश मानव – शरीर का एक जीता जागता तथा मजबूत अंग है ।

वैज्ञानिक आज इस नतीजे पर पहुँच चुके हैं कि इन्सान के केशों की बनावट तथा रचना इस प्रकार है—आक्सीजन – २८ हिस्से, हाईडरोजन – ६ हिस्से, कार्बन – ५० हिस्से, नाइट्रोजन – १७ हिस्से सल्फर – ५ हिस्से ।

थोड़ी कैलशियम तथा अग्नि भी होती है । स्पष्ट है कि ये सारी ताकतवर चीज़ें केश शरीर से ही प्राप्त करते हैं। जैसे जैसे लोग केश कटवाते हैं उपयुक्त सारी लाभदायक शक्ति भरपूर वस्तुयें मानवीय – शरीर में से घटती जाती हैं । नित्य केश कटवाने वाले इन्सानों के काटे गये केशों की लम्बाई का यदि हिसाब लगाया जाये तो सैंकड़ों गज़ से कम नहीं हो सकती । अब यह भली भांति देख सकते हैं कि जो लोग अपने केशों को कटवाते रहते हैं उनकी कितनी शारीरिक शक्ति नष्ट हुयी होगी। बहुत सारे डाकटरी विज्ञान के आधीन किये गये तजरबे भी यही सिद्ध करते हैं कि मानवीय केश मजबूत होते हैं । कई साल पहले बनी कब्रें खोद कर देखी गयीं। मुर्दों का कोई भी शारीरिक अंग साबुत न मिला । कोई हड्डी भी न मिली

पर केश मिले जो स्वयं अपनी मजबूती का प्रभाव देते हैं।

वैज्ञानिकों का कहना हैं कि केशों द्वारा मानवीय शरीर के अन्दर विटामिन डी प्रवेश करता है। यह एक रसायनिक पदार्थ है जो सूर्य की किरणों से सीधा केशों द्वारा शरीर के अन्दर प्रवेश करता हैं। केशों के बिना मनुष्य इस सीमा तक इस कीमती पदार्थ से रहित हो जाता है कि वह कई तरह के रोगों का शिकार हो जाता है।

कुदरत ने हमारे शरीर के जिस भी अंग पर ये रोम पैदा किये हैं वे किसी न किसी उदेश्य से हैं। बगलों के रोम कछराली से बचाते हैं । सिर के केश तेज गर्मी के आक्रमण से बचाते हैं। कुदरत ने शरीर का कोई भी रोम फालतू नहीं बनाया यहां उर्दू का एक शेयर दर्शनीय है :

"हर चीज़ से है तेरी कारीगरी टपकती
यह कारखाना तूंने कब राइगां बणाइआ" ।

डाराविन तथा लैमारक जैसे वैज्ञानिकों का सिद्धान्त है कि पुरुष के शरीर का कोई भी अनावश्यक अंग धीरे धीरे घटता गया तथा इस लिये आज एपस की पूँछ पुरुष का रूप धारण करने तक केवल रीढ़ की हडी बन कर ही रह गयी । साफ सिद्ध है कि यदि केश कोई अनावश्यक वस्तु होते तो अब तक मानवीय शरीर का यह अंग कायम न रहता! कुदरत ने तो सिर पर अधिक रोम उगा कर उन की महत्ता को उजागर किया है कि दिमाग जैसी वस्तु को कई तरह के खोल के बाद केशों में भी सम्भाला गया है । केश इस को गर्मी से बचाते हैं, वैसे भी गौरवमयी वस्तु का स्थान उँचा ही होता है । कुदरत ने मानों मानवीय शीश पर एक ताज मुकुट पहनाया है !

केश, सुन्दरता तथा सफाई

कुछ लोग कहते हैं कि केशों से व्यक्ति सुन्दर नहीं लगता पर बात जचती नहीं । दुनियाँ भर के पीर पैगम्बर केशों से रहित नहीं बल्कि केशधारी थे। उन के चेहरे कुरूप

तो नहीं थे ! बल्कि सुन्दर, प्रभावशाली तथा आकर्षक लगते थे । यूरोप से आये कई सिक्खों का कहना है कि उन का खुली दाढ़ी तथा केशों वाला प्रसन्न चेहरा वहाँ के स्त्री पुरुषों द्वारा पसन्द किया जाता रहा है।

केशों को साफ रखना धार्मिक दृष्टि से भी ज़रूरी है तथा सभ्यता की दृष्टि से भी । जो लोग सफाई का बहाना बना कर केश कटवाने की बातें करते हैं उन को इतना बताना काफी होगा कि हमारे घर के कमरे सामान से भरे होते हैं । ऊपरी दृष्टि से देखने पर सोफा, मेज कुर्सियाँ ट्रंक आदि अदर्शनीय लग सकते हैं पर इस का भाव यह तो नहीं कि हम सारा सामान बाहर फेंक दें बल्कि उस को साफ करना तथा ठीक तरतीब देना ही हमारा फर्ज है। ऐसा ही केशों के प्रति हैं। सचमुच केश हमारा गौरव ही तो हैं।

